R.T. No. 484117

Gopal

EXERCISE BOOK

A Warm Welcome to the New Millenium

Series 2000

Rate :

CHAUHAN PAPERS PVT. LTD.

NAME

CLASS

SUBJECT

Scanned by CamScanner

मुकद्दमा करने वाले को वादी (यायी) कहते हैं। जिस पर मुकद्दमा किया जाए उसे प्रतिवादी (स्थायी) कहते हैं। प्रथम भाव वादी का, सप्तम भाव प्रतिवादी का स्थान। ~~यदि लग्न में पाप ग्रह हो तथा सप्तम भाव में शुभ ग्रह न हो तो वादी प्रतिवादी को जीतता~~

1) यदि प्रथम भाव में क्रूर ग्रह, सप्तम में शुभ ग्रह हो तो वादी की जय। परंतु क्रूर ग्रह अस्त, नीच नहीं होना चाहिए क्योंकि अस्त या नीच क्रूरग्रह प्रतिवादी की हानि नहीं करेंगे बल्कि लाभ करेगा क्योंकि प्रथम भाव में नीच क्रूर ग्रह सप्तम में उच्च को शुभ दृष्टि से देखेगा। इसके विपरीत तो विपरीत फलादेश।

2) यदि प्रथम तथा सप्तम दोनों में पाप ग्रह हों तो चिरकाल तक लड़ाई, पूर्ण वैर या फिर संधि होगी। युद्ध हो तो और बली क्रूर ग्रह लग्न में हो तो वादी की जय अन्यथा विपरीत।

3) प्रश्नलग्न में यदि लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो संधि। अन्यथा विपरीत

4) यदि लग्नेश पंचम भाव में हो और शुभग्रह केन्द्र में हो

Scanned by CamScanner

तो वादी-प्रतिवादी में संधि। अन्यथा संधि नहीं होगी।

5) यदि लग्नेश, षष्ठेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु हों तो कलह बढ़े।

6) पुरुषराशि (1,3--) के लग्न में यदि शुभग्रह हों अथवा पुरुषराशि स्थित शुभ ग्रह 11वें या 12वें भाव में हों तो वादी और प्रतिवादी में संधि। इन्हीं स्थानों में द्वि-स्वभाव राशि हो और उसमें पापग्रह हों तो दोनों में विरोध पड़ता है।

7) शुभग्रह मनुष्य राशि (7,3,6,11, (9 का पूर्वार्द्ध)) में हों अथवा केन्द्र में हों और उन्हें शुभग्रह देखते हों तो दोनों में ~~प्री~~ प्रीतिसहित संधि, और इन्हीं स्थानों में पापग्रहों पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो विशेष वैर

8) यदि प्रथम तथा सप्तम भाव के अतिरिक्त अन्यत्र दो पाप ग्रहों की पूर्ण दृष्टि संबंध हो तो वादी और प्रतिवादी दोनों आपस में छुरियों से प्रहार करें।

9) यदि लग्नेश अष्टमस्थ होकर पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो वादी की मृत्यु, सप्तमस्थ हो तो प्रतिवादी की

Scanned by CamScanner

मृत्यु या घोर कष्ट होता है।

10) शत्रु के गमनागमन विषय में यदि पाँचवें या छठे स्थान में पापग्रह हों तो शत्रु रास्ते से वापिस, चौथे पापग्रह हों तो आया हुआ शत्रु पराजित होकर लौट जाता है।

11) यदि चतुर्थ भाव में मीन, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इनमें से के राशि हो तो शत्रु की पराजय। यदि चतुष्पद (मेष, सिंह, ध उत्तरार्द्ध) हो तो शत्रु आकर भाग जाता है।

12) प्रश्नकाल में चर लग्न हो और शुभ ग्रहों से संबद्ध हो तो यायी की विजय। यदि पापग्रह युक्त चर लग्न हो तो यायी (पहले चढ़ाई करने वाले) के लिए अशुभ। स्थिर लग्न में बलवान पाप ग्रह यायी के लिए शुभ, शुभ ग्रह यायी के लिए अशुभ।

13) यदि प्रश्न लग्न में चर राशि हो, स्थिर राशि में चन्द्र हो, तो शत्रु शीघ्र आएगा। यदि विपरीत स्थिति तो विपरीत फलादेश। यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो, द्विस्वभ में चन्द्र हो तो शत्रु अवश्य लौट जाता है। यदि द्विस्वभ लग्न हो, चन्द्र चर राशिगत हो तो शत्रु आधे रास्ते

Scanned by CamScanner

से वापिस। यदि चर प्रश्न लग्न हो तथा द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रुओं का आक्रमण।

14) यदि लग्न चरराशिगत हो तथा सू०, शु० बु०, गु० इनमें से किसी भी ग्रह से युक्त हो तो यायी राजा का गमन शीघ्र होता है। यदि ग्रह वक्री होकर युक्त हों तो गमन नहीं।

15) यदि स्थिर लग्न हो, गु० या शु० से दृष्ट हो तो प्रश्न करने वाले राजे के शत्रु का गमन नहीं होता। इसके अतिरिक्त ३, ५, ६ में पाप ग्रह हो तो शत्रु से युद्ध (उपरोक्त स्थिति भी साथ में) यदि उपरोक्त में पाप ग्रह चौथे हों तो शत्रु लौट जाता है।

16) यदि चतुर्थ स्थान में सू० या च० हो तो शत्रु की सेना नहीं आती, यदि चौथे बु०, गु०, शु० हो तो शत्रु की शीघ्र आती है।

17) यदि प्रश्नलग्न में मेष, सिंह, धनु, वृष हो या कोई भी राशि इनमें से चौथे हो तो शत्रु लौट जाता है।

18) यदि लग्न में स्थिर लग्न शनि या गुरु से युक्त हो तो आया हुआ शत्रु मार्ग में रुक जाता है। यदि चर लग्न हो तथा सू० और गु० से युक्त हो

Scanned by CamScanner

तो अवश्य जाता है।

19) सर्वोत्तम बली ग्रह लग्न से यात्रा के समय जिस राशि में स्थित हो उतने संख्यक मास में यायी राजा लौट आएगा। यदि स्थिर राशि हो तो द्विगुणित, द्विस्वभाव हो तो त्रिगुणित या फिर सप्तमेश जब वक्री है।

20) प्रश्नलग्न से, या प्रश्न नक्षत्र से जितने संख्यक चन्द्र लग्न या चन्द्र नक्षत्र हो उतने दिनों में प्रवासी का आगमन परंतु मध्य में कोई ग्रह न हो।

21) यदि प्रश्न लग्न से सातवें अथवा दसवें शुभ ग्रह हो तो स्थायी की विजय। यदि नवमें शनि या मंगल हो तो हार। यदि नवमें बुध, गु०, शु० हो तो विजय।

22) तृतीय से अष्टम तक 6 राशियाँ पौर (स्थायी) हैं। अन्य 6 राशियाँ यायी हैं। यदि यायी संज्ञा स्थायी से शुभ हो (बली-शुभ ग्रह अधिक, पाप ग्रह कम) तो यायी के लिए हितकर। यदि 10वें, 11वें, 12वें स्थान में पापग्रह हों तो यायी के पुरवासियों का अनिष्ट और राजा के

Scanned by CamScanner

लिए शुभ फल [पौर या प्रतिवादी, स्थायी तथा मुद्दलेह कहते हैं जिस पर मुकद्दमा दायर या चढाई की जाए

23) यदि द्विपद संज्ञक राशि [ ] में शुभग्रह हों, अथवा केन्द्र में शुभग्रह हों और शुभ ग्रह दृष्टियुक्त हो तो यायी और स्थायी में संधि। यदि पापग्रह केन्द्र अथवा मनुष्य संज्ञक राशि [ ] में हो तथा पापग्रह से दृष्ट हो तो विरोध।

24) प्रश्नलग्न से २, ३ स्थान में गु० या शु० हो अथवा दोनों हों तो यायी शीघ्र लौट आएगा।

25)

Scanned by CamScanner